सामाजिक परिवर्तन के प्रतिरूप या प्रकार (Patterns of Kinds of social Change)

सामाजिक परिवर्तन का स्वरूप हमेशा एक जैसा नहीं होता है। अतः हमें सामाजिक परिवर्तन के स्वरूप के सन्दर्भ में उसके प्रतिरूप या प्रकार पर विचार करना चाहिए। सामाजिक परिवर्तन का मुख्यतः तीन स्वरूप है:—

(1) सामाजिक परिवर्तन कभी-कभी क्रमबद्ध तरीके से एक ही दिशा में निरन्तर चलता है भले ही परिवर्तन का आरम्भ एक-एक ही क्यों न हो। उदाहरण के लिए हम विभिन्न आविष्कारों के परचात परिवर्तन के क्रमों की चर्चा कर सकते है। विज्ञान के अन्तर्गत परिवर्तन की प्रकृति एक ही दिशा में निरन्तर आगे बढ़ने की होती है इसलिए ऐसे परिवर्तन को एकरेखीय परिवर्तन कहते है। अधिकांश क्रमविकासीय समाजशास्त्री एकरेखीय सामाजिक परिवर्तन में विश्वास करते है।

(2) कुछ सामाजिक परिवर्तनो में परिवर्तन की प्रकृति ऊपर से नीचे की ओर जाने की होती है। इसलिए इसे उतार-चढ़ाव परिवर्तन कहते है।

(3) परिवर्तन के तृतीय प्रतिरूप को तरंगीय परिवर्तन के भी नाम से जाना जाता है। इस परिवर्तन के अन्तर्गत उतार-चढ़ाव परिवर्तन में परिवर्तन की दिशा एक सीमा के बाद विपरीत दिशा में उन्मुख हो जाती है। इसमें लहरों की भाँति एक के बाद दूसरा परिवर्तन आता है। हर समाज मे नये-नये फैशन की

लहरें आती है। हर जेनरेशन के लोगों को कुछ-न-कुछ नये परिवर्तन दिखाई पड़ते है।

वॉटमोर ने सामाजिक परिवर्तन के वर्गीकरण के चार आधारों का वर्णन किया है जो इस प्रकार है:—

(1) परिवर्तन के स्रोतों के आधार पर सामाजिक परिवर्तन का वर्गीकरण किया जा सकता है। इस आधार पर सामाजिक परिवर्तन को दो भागों में बाँटा जा सकता है — आन्तरिक परिवर्तन एवं बाह्य परिवर्तन। उन्होंने बताया कि अविकसित समाजों में बाह्य परिवर्तनों की प्रधानता होती है।

(2) सामाजिक परिवर्तन के वर्गीकरण का दूसरा आधार यह भी हो सकता है कि वृहत पैमाने पर सामाजिक परिवर्तन होने की पूर्वव्यवस्था क्या थी। यह इसलिए महत्वपूर्ण है कि उद्योगीकरण के द्वारा विभिन्न समाजों में विभिन्न प्रकार के परिवर्तन आते है। उद्योगीकरण के द्वारा जो परिवर्तन भारतीय और चीनी समाज में आया है, वही परिवर्तन अफ्रीका के आदिम जातियों में नहीं आया है। उद्योगीकरण के चलते सामाजिक परिवर्तन की रफ्तार कहीं धीमी तो कहीं तेज होगी। इसके अलावा सामाजिक परिवर्तन का स्वरूप भी अलग-अलग होगा।

(3) परिवर्तन की गति के आधार पर भी सामाजिक परिवर्तन का वर्गीकरण

किया जा सकता है। सामाजिक परिवर्तन की गति कभी तेज और कभी धीमी देखने को मिलती है। यदि सामाजिक परिवर्तन का आधार कोई जन आन्दोलन या क्रान्ति है, तो निश्चित परिवर्तन की गति ही तेज न होगी बल्कि परिवर्तन का स्वरूप भी बुनियादी होगा।

(4) अन्त में वाटमोर ने बताया है कि वर्गीकरण का आधार यह भी हो सकता है कि परिवर्तन योजनाबद्ध है या आकस्मिक। योजनाबद्ध परिवर्तन का स्वरूप आकस्मिक परिवर्तन से भिन्न होता है। आज समाज में अधिकांश परिवर्तन योजनाबद्ध तरीके से हो रहे हैं, जबकि आदिकाल में सभी परिवर्तन आकस्मिक हुआ करते थे। आकस्मिक परिवर्तन की गति योजनाबद्ध परिवर्तन की तुलना में साधारणतया धीमी होती है।